Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महादेवी वर्मा और जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रतिपादित दर्शन एवं वेदना : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. कवींद्र कुमार भारद्वाज*

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय स्नातक महाविद्यालय, हाटपीपल्या, जिला देवास (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद को आत्मानुभूति, रहस्यबोध, प्रकृति-सौंदर्य तथा दार्शनिक संवेदना का स्वर्णयुग माना जाता है। छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा का विशिष्ट स्थान है। दोनों कवियों ने मानवीय चेतना, आध्यात्मिक अनुभव तथा वेदना को अपने काव्य का केंद्रीय विषय बनाया, किन्तु उनके दार्शनिक दृष्टिकोण, अनुभूति के स्वरूप तथा अभिव्यक्ति की पद्धति में पर्याप्त भिन्नता परिलक्षित होती है। जयशंकर प्रसाद के काव्य में कश्मीर शैव दर्शन, समरसता, आनंदवाद तथा मानवतावादी दृष्टि का समन्वय दिखाई देता है, जबकि महादेवी वर्मा के काव्य में बौद्ध दु:खवाद, करुणा, विरहानुभूति तथा आध्यात्मिक रहस्यवाद की प्रधानता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में दोनों कवियों के दार्शनिक आधार, वेदना-बोध, रहस्यवाद, प्रतीक-विधान तथा प्रकृति-चित्रण का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों कवियों की साधना-पद्धति भिन्न होते हुए भी उनका अंतिम लक्ष्य मानव चेतना का परिष्कार एवं आत्मोन्नयन है।

शब्द कुंजी – छायावाद, दर्शन, वेदना, आनंदवाद, बौद्ध दु:खवाद, रहस्यवाद, समरसता, करुणा।

प्रस्तावना – द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता, उपदेशात्मकता तथा स्थूल नैतिकता की प्रतिक्रिया के रूप में हिन्दी काव्य में छायावाद का उद्भव हुआ। छायावाद ने बाह्य यथार्थ की अपेक्षा अंतर्जगत, आत्मानुभूति, कल्पना, सौंदर्य एवं रहस्य के प्रति विशेष अनुराग प्रदर्शित किया। इस साहित्यिक आंदोलन ने हिन्दी कविता को वैयक्तिक अनुभूति तथा आध्यात्मिक संवेदना की नई दिशा प्रदान की।

जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा, छायावाद के दो ऐसे प्रतिनिधि कवि हैं जिन्होंने न केवल काव्य-भाषा को समृद्ध किया, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना को भी नवीन दार्शनिक आधार प्रदान किया। प्रसाद का काव्य जीवन के प्रति सकारात्मक, समन्वयवादी और आनंदपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जबकि महादेवी का काव्य विरह, करुणा और आध्यात्मिक पीड़ा की गहन अनुभूति से अनुप्राणित है। इन दोनों कवियों का तुलनात्मक अध्ययन छायावादी चेतना की विविधता तथा व्यापकता को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

दार्शनिक पृष्ठभूमि : आनंदवाद और दु:खवाद का द्वंद्व

जयशंकर प्रसाद का शैव दर्शन और समरसता का सिद्धांत– जयशंकर प्रसाद भारतीय दार्शनिक परंपरा, विशेषत: कश्मीर शैव दर्शन के प्रत्यभिज्ञा सिद्धांत से गहरे प्रभावित थे। इस दर्शन के अनुसार जीव और शिव मूलत: अभिन्न हैं तथा संसार मिथ्या नहीं, अपितु परम चेतना की अभिव्यक्ति है। प्रसाद जीवन-विमुखता का विरोध करते हैं और संसार में रहते हुए समरसता तथा आनंद की प्राप्ति का मार्ग सुझाते हैं।

उनके महाकाव्य कामायनी में 'इच्छा', 'ज्ञान' और 'क्रिया' के संतुलन के माध्यम से मानव जीवन की पूर्णता का प्रतिपादन किया गया है। प्रसाद के अनुसार मानव का अंतिम लक्ष्य अखंड आनंद की प्राप्ति है–

'समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड घना था।।'

यहाँ 'समरसता' केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि समस्त जीवन-संघर्षों का समाधान है।

महादेवी वर्मा का बौद्ध दु:खवाद और करुणा-दर्शन – महादेवी वर्मा के काव्य पर बौद्ध दर्शन, विशेषत: 'सर्व दु:खम्' की अवधारणा का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। उनके काव्य में दु:ख केवल व्यक्तिगत अनुभूति नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि की साझा नियति है। वे पीड़ा को आत्म-विस्तार और आध्यात्मिक उत्कर्ष का माध्यम मानती हैं।

उनकी प्रसिद्ध कविता मैं नीर भरी दुख की बदली में यह संवेदना अत्यंत मार्मिक रूप से व्यक्त हुई है–

'मैं नीर भरी दुख की बदली।
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा, क्रंदन में आहत विश्व हँसा।'

महादेवी के यहाँ करुणा का स्वर केवल आत्मकेंद्रित नहीं, बल्कि विश्वव्यापी है। यही कारण है कि उनकी वेदना वैयक्तिक होते हुए भी सार्वभौमिक बन जाती है।

वेदना और विरह : एक तुलनात्मक विश्लेषण– छायावादी काव्य की मूल संवेदना विरह और वेदना है, परन्तु प्रसाद और महादेवी के यहाँ इसकी प्रकृति भिन्न है।

प्रसाद की वेदना : लौकिक से विश्वमानव तक – प्रसाद की काव्य-कृति आँसू व्यक्तिगत विरह से आरंभ होकर समष्टिगत करुणा तक पहुँचती है। उनके लिए पीड़ा आत्म-विस्तार का माध्यम है–

'इस करुणा-कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती,
क्यों हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती?'

प्रसाद की वेदना अंतत: मानवता के कल्याण और विश्व–बंधुत्व की भावना में परिणत हो जाती है।

महादेवी की वेदना : शाश्वत विरह का सौंदर्य – महादेवी वर्मा की वेदना मूलत: आध्यात्मिक और अलौकिक है। उनका प्रियतम कोई लौकिक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक अज्ञात, अनाम, अलौकिक सत्ता है। वे मिलन की अपेक्षा विरह को अधिक महत्तव देती हैं–

'मिलन का मत नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ।'

महादेवी के लिए विरह साधना है, और पीड़ा उसकी अनिवार्य शर्त। इस प्रकार उनकी वेदना शाश्वत एवं आध्यात्मिक बन जाती है।

रहस्यवाद : स्वरूप और भिन्नताएँ– छायावादी काव्य का एक प्रमुख गुण रहस्यवाद है–

प्रसाद का रहस्यवाद – प्रसाद का रहस्यवाद अद्वैतवादी है। वे आत्मा और परमात्मा की एकता में विश्वास करते हैं। उनका रहस्यवाद दार्शनिक एवं बौद्धिक है।

महादेवी का रहस्यवाद – महादेवी का रहस्यवाद भावात्मक एवं माधुर्यप्रधान है। उनके काव्य में आत्मा और परमात्मा का संबंध प्रिय और प्रेयसी के रूप में व्यक्त होता है। यह रहस्यवाद मीरा की भक्तिपरंपरा से भी संबद्ध प्रतीत होता है।

प्रकृति एवं प्रतीक–विधान

प्रसाद का प्रकृति–दर्शन – प्रसाद प्रकृति को विराट, गतिशील और मानव जीवन की सहचरी मानते हैं। कामायनी में जलप्रलय, पर्वत, नदियाँ और आकाश आदि प्रकृति के महाकाव्यात्मक रूप प्रस्तुत करते हैं। उनकी प्रकृति सौंदर्य, शक्ति और जीवन का प्रतीक है।

महादेवी का प्रतीकात्मक प्रकृति–चित्रण – महादेवी की प्रकृति अत्यंत सूक्ष्म, कोमल और आत्मीय है। वे दीपक, बादल, रजनी, पथिक, पवन, तितली, पुष्प आदि प्रतीकों के माध्यम से अपनी अंत:संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती हैं।

उनका प्रिय प्रतीक 'दीपक' आत्मोत्सर्ग और साधना का प्रतीक है–

'मधुर–मधुर मेरे दीपक जल,
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल।'

मानवतावादी दृष्टि : समानता का धरातल – यद्यपि दोनों कवियों की दार्शनिक मान्यताएँ भिन्न हैं, तथापि दोनों की चेतना का अंतिम लक्ष्य मानव कल्याण ही है। प्रसाद समरसता और आनंद के माध्यम से मानव–मुक्ति की बात करते हैं, जबकि महादेवी करुणा और सहानुभूति के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को समृद्ध करती हैं।

दोनों कवियों का काव्य मनुष्य को आत्मचिंतन, आत्मविस्तार और आत्मोन्नयन की प्रेरणा देता है।

तुलनात्मक निष्कर्ष

आधार	जयशंकर प्रसाद	महादेवी वर्मा
दार्शनिक आधार	कश्मीर शैव दर्शन	बौद्ध दु:खवाद
जीवन–दृष्टि	आनंदवाद एवं समरसता	करुणा एवं विरह
वेदना का स्वरूप	लौकिक से सार्वभौमिक	अलौकिक एवं शाश्वत
रहस्यवाद	अद्वैतवादी	माधुर्यप्रधान
प्रकृति–दृष्टि	विराट एवं महाकाव्यात्मक	कोमल एवं प्रतीकात्मक
अंतिम लक्ष्य	आनंद की प्राप्ति	पीड़ा का आध्यात्मिकीकरण

उपसंहार – निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा के काव्य में प्रतिपादित दर्शन एवं वेदना छायावादी चेतना के दो पूरक आयाम हैं। प्रसाद का काव्य जहाँ जीवन की समग्रता, समरसता और आनंद का संदेश देता है, वहीं महादेवी का काव्य पीड़ा, करुणा और आत्मसमर्पण के माध्यम से मानव आत्मा की सूक्ष्मतम संवेदनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

यदि प्रसाद छायावाद के दार्शनिक विस्तार हैं, तो महादेवी उसकी भावात्मक गहराई। दोनों कवियों ने भारतीय काव्य परंपरा को समृद्ध करते हुए मानवता के लिए एक शाश्वत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का निर्माण किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. वर्मा, महादेवी (2018) 'यामा' लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
2. वर्मा, महादेवी (2016) 'दीपशिखा' लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
3. प्रसाद, जयशंकर (2015) 'कामायनी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. प्रसाद, जयशंकर (2012) 'आँसू' भारती भंडार, प्रयागराज।
5. शुक्ल, रामचंद्र (2020)'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. सिंह, नामवर (2010)'छायावाद' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. वाजपेयी, नन्ददुलारे (2005)'कवि निराला और महादेवी' किताब महल, इलाहाबाद।
8. शर्मा, रामविलास (1999)'महादेवी वर्मा और छायावाद' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. मिश्र, विद्यानिवास (2004)'प्रसाद का काव्य दर्शन' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
10. नगेन्द्र (2008)'छायावाद का काव्यशास्त्र' नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

****